



एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 04 (अप्रैल, 2026)

www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एन.: 3048-8656

जैविक बनाम पारंपरिक खेती का अर्थशास्त्र

डॉ. हरकेश कुमार बलाई¹ एवं *प्रज्ञा श्रेष्ठ²

¹असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर, जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, चाकसू, जयपुर, राजस्थान, भारत

²स्टूडेंट, बी.एससी. (ऑनर्स) एग्रीकल्चर, जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, चाकसू, जयपुर, राजस्थान, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: pragyashresth22@gmail.com

कृषि किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ होती है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में खेती के दो प्रमुख मॉडल प्रचलित हैं—
क जैविक खेती और पारंपरिक खेती। दोनों का उद्देश्य उत्पादन बढ़ाना है, लेकिन इनके आर्थिक दृष्टिकोण, लागत संरचना और दीर्घकालिक प्रभावों में स्पष्ट अंतर पाया जाता है।

पारंपरिक खेती का आर्थिक ढाँचा

पारंपरिक खेती में रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक और उच्च उत्पादकता वाले बीजों का उपयोग किया जाता है।

- **लागत संरचना:** प्रारंभिक निवेश अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है, लेकिन समय के साथ रासायनिक इनपुट पर निर्भरता बढ़ने से कुल लागत बढ़ जाती है।
- **उत्पादन और आय:** अल्पकाल में अधिक उत्पादन मिलता है, जिससे किसान को तुरंत लाभ होता है।
- **जोखिम और प्रभाव:** मिट्टी की उर्वरता में कमी, जल प्रदूषण और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बढ़ती हैं, जिससे भविष्य में अतिरिक्त लागत का बोझ पड़ता है।
- **बाज़ार स्थिति:** उत्पाद सस्ते होते हैं, जिससे प्रतिस्पर्धा अधिक रहती है और लाभ मार्जिन सीमित हो जाता है।

जैविक खेती का आर्थिक ढाँचा

जैविक खेती में प्राकृतिक संसाधनों जैसे गोबर, कम्पोस्ट, हरी खाद और जैविक कीटनाशकों का उपयोग किया जाता है।

- **लागत संरचना:** प्रारंभिक वर्षों में उत्पादन कम होने के कारण आय घट सकती है, लेकिन बाहरी इनपुट लागत बहुत कम हो जाती है।
- **दीर्घकालिक लाभ:** मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार, जल संरक्षण और स्थिर उत्पादन से लंबे समय में आय बढ़ती है।
- **बाज़ार मूल्य:** जैविक उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है; इनके दाम पारंपरिक उत्पादों से 20–40% अधिक मिलते हैं।
- **रोज़गार सृजन:** इसमें श्रम की अधिक आवश्यकता होती है, जिससे ग्रामीण रोजगार बढ़ता है।

अन्य महत्वपूर्ण आर्थिक पहलू

- **परिवर्तन अवधि:** पारंपरिक से जैविक खेती में बदलने के दौरान 2–3 वर्षों तक उत्पादन और आय में कमी आ सकती है, जो किसानों के लिए एक बड़ी चुनौती है।
- **प्रमाणीकरण लागत:** जैविक उत्पादों को प्रमाणित कराने में अतिरिक्त खर्च और समय लगता है, लेकिन इससे उत्पाद का मूल्य बढ़ता है।
- **सरकारी सहायता:** सरकार द्वारा जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए सब्सिडी, प्रशिक्षण और योजनाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिससे किसानों का आर्थिक जोखिम कम होता है।
- **निर्यात की संभावना:** जैविक उत्पादों की अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में अधिक मांग है, जिससे किसानों को बेहतर मूल्य मिल सकता है।

- **जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता:** जैविक खेती पर्यावरण के अनुकूल होती है और बदलती जलवायु परिस्थितियों में अधिक स्थिर उत्पादन दे सकती है।
- **इनपुट आत्मनिर्भरता:** जैविक खेती में किसान अपने खेत या गांव में ही खाद और कीटनाशक तैयार कर सकता है, जिससे बाहरी बाजार पर निर्भरता घटती है।
- **दीर्घकालिक लागत नियंत्रण:** पारंपरिक खेती में समय के साथ लागत बढ़ती जाती है, जबकि जैविक खेती में लागत धीरे-धीरे नियंत्रित हो जाती है।

आर्थिक दृष्टि से निष्कर्ष

अल्पकालिक लाभ के लिए पारंपरिक खेती अधिक आकर्षक प्रतीत होती है, लेकिन दीर्घकाल में यह महंगी और पर्यावरण के लिए हानिकारक साबित हो सकती है। इसके विपरीत, जैविक खेती प्रारंभ में चुनौतीपूर्ण होते हुए भी दीर्घकाल में अधिक टिकाऊ, लाभकारी और स्थिर आय प्रदान करने वाली पद्धति है।

उपसंहार

जैविक खेती केवल एक कृषि पद्धति नहीं, बल्कि एक आर्थिक और पर्यावरणीय निवेश है। यदि किसान प्रारंभिक कठिनाइयों को सहन कर लेते हैं और उचित तकनीक व सरकारी सहायता का लाभ उठाते हैं, तो यह मॉडल न केवल उनकी आय बढ़ा सकता है बल्कि देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूत और टिकाऊ बना सकता है।